Information Explosion and the 21st Century Youth: Prospects and Challenges

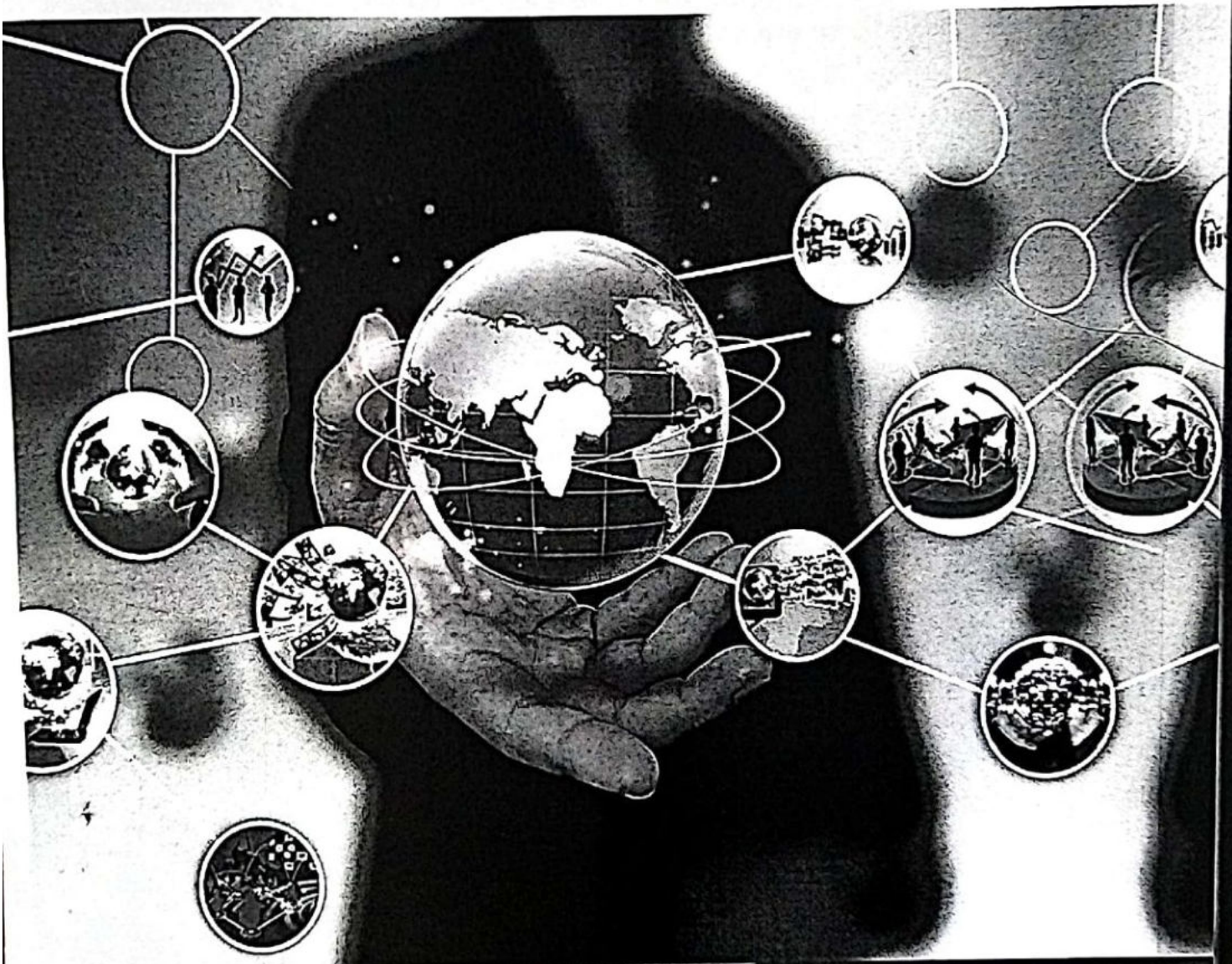

Chief-Editor
Dr. Shivani Verma

Editors
Dr. Deepti Bajpai
Dr. Satyant Kumar

Scanned by CamScanner

३५

सूचना प्रौद्योगिकी एवं साहित्य

कनक लता

सारांश

सूचना ही शक्ति है और यही सूचना जब तकनीकि के माध्यम से आने लगे, तो इसकी ताकत कई गुना [illegible] जाती है। इक्कीसवीं सदी मे किसी भी राष्ट्र के विकास की गति का प्रमुख आधार सूचना प्रौद्योगिकी जैसी [illegible]पूर्ण तकनीकि उपलब्धि पर टिका हुआ दिखाई देता है। भारत जैसे विशाल देश जो विश्व में बड़ी [illegible]वस्था के रुप में उबरने की सम्भावना लिए हुए हैं, उनके विकास को अपेक्षित गति देने कि लिए सूचना [illegible]की का साथ देना अपरिहार्य है। इससे न केवल वैश्विक लक्ष्यों को पूरा किया जा सकेगा। घरेलु मोर्चे पर [illegible]जिक आर्थिक चुनौतियों का हल तलाशा जा सकेगा। इसी निहितार्थ के उद्देश्य से भारतीय प्रधानमंत्री ने [illegible]इजेशन का लक्ष्य लेकर डिजिटल इण्डिया कार्यक्रम की शुरुआत की और कहा है कि इससे समावेशी [illegible], इकोफ्रेण्डली और तीव्र विकास को अपेक्षित गति मिलेगी। सूचना और संचार की प्रौधोगिकी जहां [illegible]नकारी की क्षुधा को शांत करता है, वही संपर्कों का सघन ताना-बाना बुनने में भी सहायक सिद्ध होता [illegible], यह अथाह सागर है जिसे अब सीमा में बांध पाना मुश्किल है। इससे कोई क्षेत्र अनछुआ न रहा तो [illegible]हित्य भी इससे प्रभावित हुआ।

साहित्य और प्रौधोगिकी की जोड़ी एक अन्धे एवं लंगड़े व्यक्ति की जोड़ी के समान है, जो एक दूसरे [illegible]परस्परिक सामञ्जस्य एवं सहयोगी भाव से अपने वाञ्छित ध्येय कि दिशा में आगे बढ़ते जाते हैं।

इस प्रकार की विद्या से लोकमंगल की भावना को साधने का प्रयास हमें साहित्य एंव प्रौधोगिकी की [illegible] दिखाई देता है। चूंकि दोनों का उद्देश्य मानव जीवन के कल्याण को तुष्ट करता है अतः दोनों एक-[illegible]भाविक सहयोगी बन पड़े। साहित्य मनुष्य की विचारधारा का प्रतीक है साहित्यकार केवल विचार [illegible]निक उसी विचार को मूर्त रुप देता है। क, ख, ग, को लिपिबद्ध करना साहित्य का नहीं बल्कि [illegible] का काम है। प्रौद्योगिकी के ही कारण आज सभी साहित्यिक संसाधन घर पर ही उपलब्ध है। कागज [illegible] तकनीकि की ही सहायता से सम्पन्न हुआ। विचारों को जैसे जैसे तकनीकि का साथ मिलता [illegible] वे फैलते गए। यदि कलम, दवात, लिपि, कागज का आविष्कार नहीं हुआ होता तो क्या हम अपने [illegible] संचारित कर पाते। कम्प्यूटर साहित्य के लिए एक क्रान्ति का काम करता है। तकनीकि ने साहित्य [illegible] को बढ़ाया, उसने साहित्य का विकेन्द्रीकरण किया।

[illegible], संस्कृत विभाग कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर गौतमबुद्ध नगर

Scanned by CamScanner

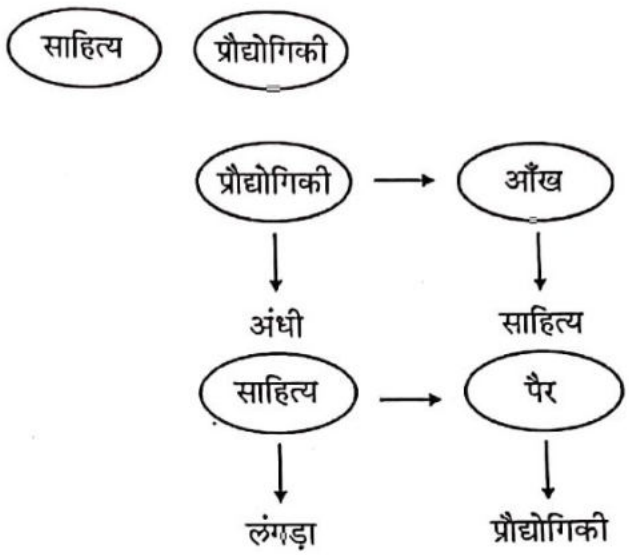

कोई भी साहित्य यदि सत्यम् शिवम् सुन्दरम् पर कार्य करे तो साहित्य अपनी मर्यादा के अ कल्याणकारी दिशा में प्रवर्तित होता रहेगा। यदि तकनीकी साहित्य का साथ छोड़ देगी तो वह अपने से परिवर्तित हो जाएगी। दोनों का मूल उद्देश्य मनुष्य का कल्याण है। यदि भविष्य में साहित्य और एक दूसरे का साथ देते रहे तो दोनों के समन्वय द्वारा मानव जीवन को सरल बनाया जाना अधिक स भारत सरकार द्वारा चलाये गये अभियान डिजिटल इन्डिया से साहित्य को काफी लाभ पहुंचा है। उपन्यास गोदान 20 कि.मी. लाइब्रेरी से पहले ही घर पर ही कम्पयूटर पर उपलब्ध हो जाता है। डि ने भारत के महाशक्ति बनने की उड़ान में नई तकनीकि के पंख लगा दिए हैं।

डिजिटल इंडिया के 9 स्तम्भ

1. ब्राइबैण्ड हाइवेज
2. सबकी फोन तक पहुंच
3. सार्वजनिक इन्टरनेट एक्सेस प्रोग्राम
4. ई-गवर्नेस
5. ई-क्रान्ति
6. सबको सूचना
7. इलेक्ट्रानिक्स निर्माण में शून्य आयात
8. नौकरियों के लिए
9. अर्ली हार्वेस्ट प्रोग्राम

प्रौद्योगिकी साहित्य के उन अनेक बाधाओं को दूर कर रही हैं, जो ग्रामीण साहित्य को दे रहा। ग्रामीण व पर्वतीय दुर्गम्य स्थानों के साहित्य भी आज सर्वोपलब्ध हो गए है। ह प्रौद्योगिकी साहित्य में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों के लिए अपनी मर्जी से कहीं भी अच्छे क्षेत्र में आगे बढ़ सकते हैं।

Scanned by CamScanner

अततः साहित्य और प्रौद्योगीकि वर्तमान परिवेश्य में एक दूसरे के लिए अपरिहार्य वन गए है। मानव-जीवन का परिष्कार उसका भौतिक व आर्थिक विकास इस सम्बन्ध का सुखद परिणाम है अपने इतिहास से लेकर भावी सम्भावनाओं के नजरिए ने इसकी उपादेयता को अधिक समावेशी, तीव्रगामी व कल्याणोन्मुखी बनाने की दिशा में प्रगतिशील प्रयास किया है और ऐसे में साहित्यकार और प्रौद्योगिकीकर्ता दोनों साधुवाद के पात्र हैं।

संदर्भ

1. कुरुक्षेत्र वर्ष 63 अंक-10
2. ऑनलाइन एजुकेशन इन इंडियाः 2021 के पी एमजी रिपोर्ट।
3. प्रो. अजामिल इंटरनेट पर बढ़ती लोकप्रियता।
4. प्रतियोगिता दर्पण अंक-3 वर्ष 2015
5. भारत परिदृश्य एक अध्ययन।

Scanned by CamScanner